International Journal of Applied Research 2022; 8(6): 571-574

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(6): 571-574
www.allresearchjournal.com
Received: 08-03-2022
Accepted: 22-05-2022

अर्चना कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, ल०ना०मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
अर्चना कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, ल०ना०मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

प्रदीप सौरभ के उपन्याय तीसरी ताली में वर्णित समलैंगिकता एवं किन्नरों में बढ़ते देह-व्यापार का चलन

अर्चना कुमारी

सारांश
इक्कीसवीं सदी में जी रहा मानव आज भी पुरातन मान्यता को लेकर चल रहा है। बहुत-सी मान्यताएँ तो बदल गई, किन्तु कुछ मान्यताएँ आज भी हैं जिन्हें बदलने में असमर्थ हैं। समय के साथ-साथ दुनिया बदल गई बात बदला, विचार बदली परन्तु जो न बदला वह है नजरिया। वो भी उस तबके के लिए जिसकी शारीरिक संरचना हू-ब-हू मनुष्य की तरह ही है, परन्तु अपने लैंगिक दुविधा के जद्दोजहद में जी रहा है। प्रदीप-सौरभ ने देह व्यापार जैसे संवेदनशील विषय को बड़ी बखूबी से उपन्यास के अलग-अलग पृष्ठों पर लिखने का काम किया है। उन्होंने इस विषय को समाने रखने की सफल प्रयास ही नहीं किया है, अपितु इसका मुख्य कारणों के बारे में भी बताया है। उन्होंने रेखा चितकबरी, पिंकी और सुनयना के माध्यम से अपनी बात रखी है। रेखा चितकबरी जो दिल्ली युनिवर्सिटी से बी.ए. किया था, आज के दौर में वह दिल्ली की नामचीन कालगर्ल सप्लायर थी। पिंकी जो डिम्पल के गैंग की हिजड़ी थी, वह भागकर रेखा के साथ हो ली थी और डिम्पल के गैंग की एक और हिजड़ी सुनयना को उसके गैंग में शामिल होने का बार-बार न्यौता दे रही थी।

कूटशब्द: समलैंगिकता, पुरातन मान्यता, शारीरिक संरचना, संवेदनशील विषय

प्रस्तावना
समाज में स्त्री और पुरुष के बीच शारिरक सम्बन्ध को जायज तथा प्राकृतिक माना गया है। इसके अलग, बाकी सभी प्रकार के सम्बन्धों को अमानवीय तथा नजायज ठहराया गया है। परन्तु धारा 377 हटने के बाद इस तरह के संबंध जायज हो चुका है। उपन्यासकार प्रदीप सौरभ ने भी इस मुद्दे पर पाठकों का ध्यान आकर्षित करने का सफल प्रयत्न किया है। उन्होंने एक अध्ययाय ही इस विषय को समर्पित कर दिया है और उपन्यास के अलग-अलग हिस्सों में भी विषय की झलकियाँ देखने को मिलती है।

सुविमल भाई, एक फुल टाइम अन्दोलनकारी थे। इसके साथ वह गाँधीवादीबन गये था अपने नेतागिरी चमकाने के लिए स्त्रियों का सहयोग तो चाहिए था, परन्तु औरतों के गन्ध से नफरत करते थे। जहाँ भी आन्दोलन होता वहाँ वह पहुँच जाते। आन्दोलन के अलावा सुविमल भाई को और कुछ आता भी नहीं था। इसी बीच बीना बेन की पहल पर 'जनान्दोलनों का राष्ट्रयी समन्वय' नामक एक संगठन बना।

दिल्ली का समन्वयक के रूप में सुविमल भाई को चुना गया और फिर एक बार बेरोजगार होने से बच गये।

इसी संगठन के कार्य करते-करते एक दिन सुविमल भाई बीमार पर जाते हैं। मयूर बिहार स्थित एक फ्लैट में उस दिन अकेले रनहे के कारण कोई उनका देख-भाल करने वाला न था। इसी दौरान उन्हें शादी करने का विचार मन में आया। उन्हीं के संगठन में सेवाभाव से काम करने वाली रति को बहला फुसलाकर प्यार का झाँसा देकर एक दिन कोर्ट मैरेज कर लिया। सुविमल भाई का इस विवाह से एक ही मकदस था, उनका सेवा-शुश्रूषा और समय-समय पर भोजन। इसके अलावा न रति से कुछ लेना न रति को कुछ देना। समय बीतता गया, रति के मन में सुविमल से सम्बन्ध स्थापित करने की उद्वेगना तो जागती थी, परन्तु वह मन मशोस कर रह जाती। परन्तु कुछ दिनों के बाद रति के मायके वाले पुछते या लोग उसे बाँझ कहते तो वह दुखी हो जाती। ऐसा नहीं कि रति ने कभी पहल न किया हो, परन्तु जब भी वह सुविमल से चिपकने कि कोशिश करती तो सुविमल उसे झटक देता। रति जब कुछ दिनों के लिए मायके गई, तो सुविमल अपने रंग में आ गया। उसके ही फ्लैट में मुरादाबार का अनिल भी रहता था। अनिल बचपन से ही पुरुष के संसर्ग का आदी था। इस घटना को उपन्यासकार मे कुछ इस तरह परोसा है– "अनिल बचपन से ही पुरुष के संसर्ग का आदी हो चुका था। उसे भी औरत की गन्ध गुदगुदाती नहीं थी। शुरूआत में उसे कुछ पता नहीं था। बचपन में वह लड़कों के साथ मम्मी-पापा का खेला खेलता था। इस खेल में वह मम्मी ही बनता था। बाद में जब वह छठी में पढ़ने गाँव से दो किलोमीटर दूर गया तो गुरुजी अक्सर उदसकी एक्सट्रा क्लास लगाते। सारे बच्चे-चले जाते तो गुरुजी अनिल के साथ घण्टों खेलते। एक्स्ट्रा क्लास के बावजूद जब वह छठी में फेल हो गया, तो उसके घरवालों का माथा ठनका। एक दिन उसका बड़ा भाई और उसके कुछ दोस्त देर शात स्कूल पहुँच गये। गुरुजी और अनिल आलिंगनबद्ध थे। गुरुजी अनिल का चुम्बन लिए जा रहे थे। यह दृश्य देखकर अनिल के बड़े भाई को ताब आ गया।"[1]

ऐसे ही सुविमल भाई और अनिल के बीच का रिस्ता था। वे दोनों एक दुसरे के बहुत करीब थे। इतने करीब की मानो रति उन दोनों के बीच की कवाब में हड्डी हो। रति के परोक्ष में तो यह सब चलता ही था। परन्तु रति के उपस्थिति में भी दोनों अपने को रोक नहीं पाते थे। रति ने एक दो बार ओझल नजरों से देखा भी परन्तु इस बात का अन्दाजा न लग सका। परन्तु एक रात जव वह टॉयलेट के लिए अपने कमरे से निकली तो उसने जो देख उपन्यासकार ने इस तरक व्यक्त किया है– "सुविमल भाई और अनिल रतिक्रिया करने में व्यस्थ ये दोनों की साँसे फूल रही थी। वे दोनों एक-दूसरे के पुरूषांग को मुँह में डालकर चूस रहे थे। दोनों मदाहेश थे। उन्हें रति के पास होने का अहसास ही नहीं हुआ। उसी रात पहली बार रति का माथा ठनका था। उसके लिए आदमी का आदमी के साथ इस तरह का व्यवहार एकदम नया था। उसे समझने में देर न लगी। फिर भी वह लम्बे समय तक अपनी आग दबाए हुए चुपचाप यह सब देखती और सहती रही।"[2]

सुविला भाई आन्दोलनकारी थे। उनका जिसमें रूचि था वो करे। यह न तो अमानवीय और धारा 377 हटने के बाद अपराधिक। परन्तु रति को इसी तरह के काम के लिए उकसाना न तो मानवीय है और न ही अपराध रहित। रति के द्वारा काफी संवेदना पूर्ण सवाल के बाद सुविमल भाई ने जो कहा वह संवेदनहीनता दर्शाता है। सुविमल भाई बोले– "देखो रति, तुम भी किसी स्त्री से सम्बन्ध बना लो। अलग तरह की अनुभूति होगी।" "स्त्री से सम्बन्ध?" रति आश्चर्य के साथ बोली, "ऐसा मैं सोच भी नहीं सकती। यह प्रकृति के खिलाफ है। स्त्री-सम्बन्ध से में माँ कैसे बनूँगी? स्त्री-सम्बन्ध से कोई भी स्त्री पूर्ण स्त्री नहीं बन सकती है।" "यदि तुम्हें यह पसन्द नहीं हैं तुम अनिल के साथ अपने शारीरिक सम्बन्ध बना सकती है अनिल स्त्री और पुरुष दोनों के साथ कमफर्टेबुल है। इस पर मुझ कोई आपत्ति भी नहीं होगी।"[3]

इतना सब होने के बाद रति और सुविमल भाई का रिश्ता आगे और कितना दिन चल सकता था। दो अलग विचारधारा, दो अलग इच्छाएँ कब और कैसे एक हो सकती है। नतीजतन रति और सुविमल भाई तलाक के माध्यम से अलग हो गए। सुविमल भाई विवाह के बाद भी रति का पति न बन सका, अपने नाम के हिसाब से वह रति के लिए भी भाई का भाई रह गया। रति नक्सलियों की पार्टी सीपीआई (एमएल) के कार्यकर्ता मनुश्वर से शादी कर ली और सुविमल भाई भी अनिल के साथ खुलेआम पति-पत्नी की तरह रहने लगे।

उपन्यास में आगे बढ़ने पर गौतम साहब का बेटा जो खुद को लड़की मानता था, एक दिन अपने घर से भाग जाता है। जब वह अपनी बहन का सबसे किमती सलवार-सूट पहनकर दिल्ली के केजी मार्ग पर धूम रहा होता है, तो उसके ठीक बगल में एक ब्लैक कलर की स्कोडा कार आकर रूकती है। फिर आगे जो उस कार में होता है, उपन्यासकार ने उस दृश्य को इस उपन्यास में उकेरा है। उपन्यासकार कहीं-न-कहीं यह दिखाना चाहते हैं कि स्टैटस कोई चीज नहीं होती। कोई शारीरिक प्यास बूझने को, तो कोई अपनी जरूरत पूरा करने को, कोई शैकिया, तो कोई फन के लिए समलैंगिक रिस्ता स्थापित करता है।

जिस तरह सुविमल भाई औरतों के गन्ध से भी नफरत करते थे, उसी तरह यास्मीन और जुलेखा पुरुषों के गन्ध से नफरत करती थीं। उपन्यासकार ने इस संदर्भ को इस तरह प्रस्तुत किया है– "घर में चर्चा के दौरान शादी का नाम सुनते ही यास्मीन और जुलेखा भड़क उठती। सुविमल भाई को जिस तरह औरत की गन्ध पसन्त नहीं थी, ठीक वैसे ही यास्मी और जुलेखा पुरुष-गन्ध से नफरत करती थी।"[4] जुलेखा का पुरुष से दूरी बनाने का कारण तो उसके साथ हुए जादती था परन्तु यास्मीन पुरी तरह औरत के प्रति आसक्त थी।

समय बदला, समलैंगिकता को कानूनी मंजूरी तो मिली ही पर धीरे-धीरे सामाजिक चेतना में भी बदलाव आने लगा। यही कारण था कि यास्मीन और जुलेखा की शादी मजिस्ट्रेट के सामने हुई। इतना ही नहीं, मजिस्ट्रेट ने दोनों की सुरक्षा के लिए पुलिस को आदेश भी दिया। कानूनी मंजूरी मिलने के बाद, दोनों के पिता ने भी इनके रिस्ते को कबूला और अपने बेटी को दान-दहेज देकर विदा किया। जुलेखा यास्मीन के घर उसके पत्नी के रूप में रहने लगी।

सुविमल भाई ने अनिल से आर्यसमाज रीति-रिवाज से शादी तो कर ली थी, परन्तु अनिल से सुविमल भाई ऊब गए थे। वह अनिल से कटे-कटे रहने लगे। एक ही फ्लैट में रहने के बावजूद अलग-अलग कमरे में रहते थे। सुविमला भाई का अनिल के प्रति मोह भंग हो चुका था, परन्तु अनिल सुविमल को छोड़ना नहीं चाहता था। वह एक पत्नी की भाँति आजीवन उसके साथ रहना चाहता था। अनिल पूरी तरह से सुविमल पर आश्रित था। वह कभी सुविमल के अलावा किसी के बारे में सोचा भी नहीं।

सुविमल के मन में अनिल के प्रति इनती दूरी का कारण था वैभव। उपन्यासकार इस वक्या को व्यक्त करते हुए लिखते हैं– "वैभव और सुविमल भाई काफी नजदीक आ गये थे। वैभव के बीच में आ जाने के कारण ही सुविमल भाई और अनिल के रिश्तों में दरार आयी थी। गे कम्युनिटी के कई लोगों ने कोशिशें की थीं कि दोनों का रिश्ता न टूटे। दिल्ली में उन दोनों की पहली समलैंगिक शादी थी। उसके टूटने से समलैंगिक विरोधियों को कहने-सुनने का मसाला मिल जाना था। इस सबके बावजूद सुविमल भाई और अनिल के रिश्ते सामान्य नहीं हो रहे थे। वैभव के प्यार में अनिल भाई की आँखों पर पट्टी बाँध दी थी। वैभव भी पीछे हटता नहीं दिख रहा था। अन्तत: सुविमल भाई ने अनिल से छुटकारा पाने का अन्तिम फैसला कर लिया।"[5]

उपन्यास के अगले हिस्से में रसूख रखने वाले देश में फैशन आइकन कहे जाने वाले लोगों का समलैंगिक होने का बात कहा गया है। मशहूर फैशन डिजागनर मनीष ग्रोबर किस तरह अभिवेक के प्रति कामवासना में आसक्त हो जात है इसका उल्लेख उपन्यासकार ने किया है।

उपन्यासकार प्रदीप-सौरभ ने देह व्यापार जैसे संवेदनशील विषय को बड़ी बखूबी से उपन्यास के अलग-अलग पृष्ठों पर लिखने का काम किया है। उन्होंने इस विषय को समाने रखने की सफल प्रयास ही नहीं किया है, अपितु इसका मुख्य कारणों के बारे में भी बताया है। उपन्यास के शुरूआती हिस्से में ही उन्होंने रेखा चितकबरी, पिंकी और सुनयना के माध्यम से अपनी बात रखी है। रेखा चितकबरी जो दिल्ली युनिवर्सिटी से बी.ए. किया था, आज के दौर में वह दिल्ली की नामचीन कालगर्ल सप्लायर थी। पिंकी जो डिम्पल के गैंग की हिजड़ी थी, वह भागकर रेखा के साथ हो ली थी और डिम्पल के गैंग की एक और हिजड़ी सुनयना को उसके गैंग में शामिल होने का बार-बार न्यौता दे रही थी। उपन्यासकार लिखते हैं– "इन दिनों ग्राहक लड़कियों से ज्यादा लड़कों की माँग करते थे, वह भी कम उम्र के कमसिन लड़कों की। खासकर विदेशी ग्राहकों में लड़कों की माँग ज्यादा थी। पिंकी हिजड़ों के बीच से निकलकर रेखा चितकबरी के साथ खुश थी। कमाई एक रात में ही अच्छी-खासी हो जाती थी और नाच-गाकर शरीर भी नहीं तोड़ना पड़ता था। वह कई बार सुनयान को रेखा चितकबरी गैंग में शामिल होने का न्यौता दे चुकी थी।"[6]

उपन्यासकार ने किन्नर समाज में बढ़ता सेक्स धंधा का तो एक मुख्य कारण अच्छी और मोटी इनकम ही बताया है, इसके अलावा आजाद और बेफिक्री की जिन्दगी के कारण भी इस समाज के लोग देह-व्यापार की ओर अग्रसर हो रहे हैं। जब एक बार इस धंधे में कदम रखतें हें, तो उन्हें नाचना-गाना घटिया प्रतीत होने लगता है। उपन्यासकार लिखते हैं– "दिल्ली में इन दिनों नाचने-गानेवाले हिजड़ों का अकाल था। अधिकतर हिजड़े सेक्स बिजनेस में लगे थे। कमाई भी मोटी हो जाती है सेक्स के धन्धे में। फिर किसी गुरु की धौसपट्टी और समाज से निकाले जाने का डर भी नहीं होता। बिना किसी परवाह के अपने मन के मालिक। सेक्स के धन्धे में लगे हिजड़े नाचने-गाने को घटिया कम समझते थे।"[7]

अच्छी इनकम, आजादी के बाद तीसरा मुख्य कारण उपन्यासकार ने शारिरिक जरूरत को बताया है। हिजड़ा समाज में भी कुछ हिजड़ा हैं, खासकर जिनके अन्दर स्त्रित्व की भावना होती है, उनमें अक्सर कामवासना जागृत होती है और उनकी कामवासना को कौन शान्त करे। उनमें भी पुरुष के प्रति आकर्षण पैदा होती है, परन्तु उनके शारिरिक जरूरत को पूरा नहीं किया जा सकता। एक ऐसी ही हिजड़ी है सुनयना, जो बहादुर शेरपा के प्रति आकर्षित है और उसके द्वारा अपनी प्यास बुझाने को आतुर है। परन्तु शेरपा उसपे डोरे नहीं

डालता। जिसके कारण सुनयना भी पिंकी की तरह रेखा चितकबरी की गैंग में शामिल होने के लिए तैयार हो जाती है। उपन्यासकार इसी भावना को व्यक्त करते हुए लिखते हैं– "इधर सुनयना अपने भीतर दहकती आग पर काबू नहीं कर पा रही थी और उधर शेरपा अपना लँगोट ढीला नहीं कर रहा था। ऐसे में सुनयना को पिंकी की याद आयी, तो डेरा छोड़कर भाग गई थी रेखा चितकबरी के गैंग में। पिंकी पहले भी कई बार सुनयना को रेखा चितकबरी के गैंग में शामिल होने का न्यौता दे चुकी थी। इस बार उसने मन पक्का किया।"[8]

इन कारणों के अलावा उपन्यासकार ने कॉलगर्ल माफिया का हिजड़ों को इस धन्धे में खींचने के लिए जो षडयंत्र रचा जा रहा था, उसे भी एक कारण माना है। इन माफियाओं के षडयंत्र में कई हिजड़े फस जाते और देह-व्यापार में सन्लग्न हो जाते। हिजडों की गद्दियाँ भी इन्हें रोकने के लिए हर संभव प्रयास करते। कुछ इस दलदल में जाने से रूक जात तो कुछ इस दलदल में फँस जाते। उपन्यासकार के शब्दों में– "कालगर्ल माफिया जिस तरह से हिजड़ों को इस धन्धे में खींच रहा था, उससे लग रहा था कि शायद भविष्य में शुभ मौकों पर हिजड़ों का आशीर्वाद चाहनेवालों को उनके दर्शन ही न हों। वहीं दूसरी तरफ हिजड़ों की गद्दियाँ अपने को बचाने में लगी हुई थीं। वे अपने यहाँ रहनेवालें की पहले से ज्यादा देखभाल करने लगी थीं। उनके वेतन भी बढ़ा दिए गये थे। कालगर्ल माफियाओं और जिड़जों के बीच झड़पों की खबरें भी अब ज्यादा बढ़ गई थी। हिजड़े गद्दी छोड़कर भागते, तो गद्दियों के मुसटण्डे उन्हें पकड़ लाने की कोशिश करते, जिसमें कई बार उन्हें सफलता मिलती और कई बार नहीं मिलती।"[9]

एक और कारण जो इस उपन्यास में देखने को मिलता है वह है- हिजड़ों में अपनी अइयासी को पूरा करने के लिए ऊपरी कमाई की लालच। कुछ हिजड़े इस धंधे में पूर्ण रूप से सन्लग्न नहीं होते, परन्तु शैकिया तौर पर ऊपरी कमाई के लिए कभी-कबार अपना देह बेचते हैं। जिससे उन्हें अपने शैक पूरा करने के लिए पैसा उपलब्ध हो जाता है। ऐसे ही एक शैकिया हिजड़ी थी- श्रीदेवी। वह अपने खाने-पीने के शैक को पूरा करने के लिए वह रेखा चितकबरी से जुड़ी हुई थी पर टेम्परोरी बेसिस पर परमानेण्ट बेसिस पर नहीं और इस बात का एहसास वह रेखा चितकबरी को भी बराबर दिया करती थी। उपन्यासकार लिखते हैं– "श्रीदेवी चन्दाबाई के जिन्दा रहते उनकी नजर बचाकर कहीं जाने का बहाना बनाकर कई बार रेखा चितकबरी के कस्टमरों के पास जा चुकी थी। उसको ऊपर से कमाने की आदत थी। चटोरी जो थी। मोतीमहल का बटर-चिकन उसे बहुत पसन्द था। कभी-कदार दारू मिल जाए तो कहने की क्या थे। जपनी यही ख्वाहिशों को पूरी करते के लिए वह रेखा चतिकबरी से जुड़ी हुई थी। रेखा चितकबरी ने श्रीदेवी के जरिये भी गद्दी से जुड़े युवा हिजड़ों को तोड़ने की कोशिश की थी, पर वह कामयाब नहीं हुई। श्रीदेवी ने भी उसका ऑफर ठुकरात हुए कहा था, "कभी-कभी की बात और है, लेकिन हम परमानेण्ट तौर पर तुम्हारे नहीं जुड़ सकते हैं।""[10]

कहते हैं न, गलत धंधा कभी फलता-फूलता नहीं। गलत काम का अंत एक दिन अवश्य होता है। अपनों ठुकराकर कभी कोई आबाद नहीं हो सकता। यही हुआ रेखा चितकबरी के साथ। रेखा चितकबरी का धन्ध चौपट हो गया था। वह पुलिस के हत्थे चढ़ चुकी थी। उसके ठिकानों पर पुलिस का छापा पड़ रहा था। रेखा चितकबरी को जेल भेज दिया गया। रेखा चितकबरी के जेल जाने से पिंकी और सुनयना दर-दर की ठोकरें खाने लगे। अब उनके लिए उनकी विरादरी में भी कोई जगह नहीं बचा था। वे दोनों डिम्पल के पास भी लौटी थी। परन्तु डिम्पल ने भी यह कहकर नकार दिया कि– "हरामी मौज-मस्ती करने गये थे। धन्धा करके आजाद जिन्दगी जीना चहाते थे। भड़वो, अब जाओ उसी रेखा चितकबरी के पास जेल में। नाच-गाकर इज्जत से दो रोटी मिल रही थी तो पची नहीं।"[11] और आखिरकार पिंकी सुनयना भीख माँगने को मजबूर हो गए। 'मरता क्या न करता' यह वाक्य यहाँ चरितार्थ होता है।

जिसे जिस्म बेचकर पैसा कमाने की चहट बैठ जाए, वह दिनभर सिगनल और मार्केट में ताली ठोककर सिक्कों की खनखनाहट सुनकर खुश नहीं होते। जहाँ उन्हें दिन भर ताली ठोकनी परती थी, और चिल्लर मिलता था तो उन्हें जिस्म फरोसी की आराम वाली जिन्दगी की याद सताती थी। इस कारण पिंकी और सुनयना फिर से जिस्मफरोशी करने वाली मल्लिका के साथ जिस्म-फरोसी के धंधे में अग्रसर हो गई।

संदर्भ

1. प्रदीप सौरभ, तीसरी ताली, वाणी प्रकाशन, पृ०- 68
2. वही, पृ०- 69
3. वही, पृ०- 70
4. वही, पृ०- 121
5. वही, पृ०- 171
6. वही, पृ०- 16
7. वही, पृ०- 61
8. वही, पृ०- 77
9. वही, पृ०- 80
10. वही, पृ०- 113
11. वही, पृ०- 169